नई पीढ़ी के प्रमुख दलित रचनाकारों की कहानियों में आधुनिकता बोध

(सन् 2005-2015 तक)"

दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी), दयालबाग, आगरा की पी.एच.डी. (हिंदी) की उपाधि **हेतु** प्रस्तुत शोध विषय की प्रस्तावित

रूपरेखा

सन् : 2016

निर्देशिका :

प्रो. कमलेश कुमारी 'रवि'
प्रोफेसर
हिंदी विभाग
कला संकाय

शोधार्थिनी :

तपस्या चौहान

हिंदी विभागाध्यक्ष

प्रो. शर्मिला सक्सेना

कला संकाय प्रमुख

प्रो. रागिनी रॉय

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी), दयालबाग, आगरा - 282005

नई पीढ़ी के प्रमुख दलित रचनाकारों की कहानियों में आधुनिकता बोध
(सन् 2005–2015 तक)

शोध परिचय :

कहानी सुनने व कहने का प्रचलन प्राचीन काल से चला आ रहा है । रचनाकार अपने परिवेश से प्रभावित होकर युग विशेष की परिस्थितियों से आत्मसात कर, उनसे प्राप्त अनुभवों की कहानी रूप में प्रस्तुत करता है । कहानी हिंदी गद्य की प्रमुख विधा है, जिसके माध्यम से लेखक अपने विचार व संदेश दूसरे व्यक्ति को बड़े कलात्मक व मनोरंजनात्मक ढंग से संप्रेषित करता है। कहानियों के मुख्यतः दो रूप देखने को मिलते हैं। एक वह कहानियाँ जो सामान्य रूप से लिखी जाती हैं और दूसरी वह जिसके अंतर्गत किसी विशेष वर्ग की पीड़ा व स्थिति को आधार बनाकर लिखा जाता है, वह दलित कहानियों की श्रेणी में आता है । दलित साहित्य दलित व सवर्ण दोनों के द्वारा लिखा जा सकता है। मानव सभ्यता के विकसित होते ही जनसमूह विभिन्न समुदाय में बँट गये तथा आपस में संघर्ष करने लगे, जो विजयी होता वह स्वयं को श्रेष्ठ तथा परास्त को हीन समझने लगा। यहीं से स्वामी व दास की उत्पत्ति हुई और दलित कहानी का आरंभ भी इसकी एक अस्मिता है तथा यह समाज को सापेक्ष और वस्तुनिष्ठ बनने की प्रक्रिया से जोड़ने के लिए अपना कदम बढ़ाकर जो पहल की है उसके कारण दलित साहित्य ने हिंदी साहित्य में अपनी एक अलग पहचान स्थापित करते हुए अपने सामाजिक मूल्यों को दृढ़ता से रखा है। जैसे-जैसे दलित साहित्य हिंदी साहित्य की आवश्यकता बनता गया, वैसे-वैसे यह समाज में फैले जातिवाद के दंश को झेल रहे समुदायों की पीड़ा व समाज के विकृत चेहरे को अनावरित करने लगा। दलित साहित्य समाज के उस घिनौने चेहरे को सामने लाता है, जो वर्षों से समुदाय विशेष का शोषण करता आ रहा है । दलित साहित्य दलितों के प्रति हो रहे अन्याय के साथ-साथ एक संघर्ष भी है।

प्रस्तुत शोध विषय की प्रेरणा एवं चयन :

युवा दलित वह साहित्य है जिसमें अधिकारों, न्याय व अस्मिता के लिए संघर्ष है । यह साहित्य अपने दुःख-पीड़ा की अनुभूति को अभिव्यक्ति प्रदान करने के साथ-साथ शोषक वर्ग से

सवाल-जवाब भी करता है तथा वर्तमान में उत्पन्न समस्याओं के समाधान देकर उनके निष्कर्षों से अवगत कराता है।

युवा दलित कहानीकारों की कहानियाँ दलित साहित्य में एक नवजागरण है। यह कहानियाँ प्रथम पीढ़ी के कहानीकारों से पूर्णतः भिन्न हैं। प्रथम व दूसरी पीढ़ी के कहानीकारों का विषय स्वानुभूति था, जिसे वह कथा साहित्य के विषय का आधार बनाकर चले। समुदाय विशेष की पीड़ा का यथार्थ चित्रण पाठक के हृदय को द्रवित कर देता, जो सहानुभूति के अलावा कोई नवीन दृष्टिकोण अथवा विचारधारा प्रस्तुत नहीं करता। ये कहानियाँ शोषक वर्ग व शोषित वर्ग का यथार्थ चित्रण मात्र है तथा इन्हें समुदाय विशेष द्वारा सीमांकित किया जा सकता है। स्त्री की दयनीय दशा का चित्रण अपराध-बोध-सा प्रतीत होता है जिसमें नकारात्मक संदेश संप्रेषित होता है, जबकि युवा दलित कहानियों को सीमांकित नहीं किया जा सकता। यह किसी एक समुदाय विशेष की यथार्थ अनुभूति न होकर अन्य दलित समुदाय (इसाई, हिजड़ा, सिक्ख आदि) विशेष के दलितों की आपबीती के चित्रण के साथ-साथ विद्रोह की चिंगारियों को भी अस्तित्व में लाती हैं। अनुसूचित जाति की संकीर्ण दीवारों को त्यागकर विश्वव्यापी दलित साहित्य की जो नींव डाली जा रही है, वह दलित साहित्य का नवजागरण काल है जिसमें दलित कहानियाँ मात्र पीड़ा और आक्रोश की अभिव्यक्ति न होकर, पुरातन परंपराओं और जातिवादी व्यवस्था, विभेदवादी आचार-संहिताओं पर तार्किक दृष्टि से मूल्यांकन करते हुए नवीन विचारधारा व शैली को अपनाती हुई आगे बढ़ रही है। इस साहित्य ने एक नवीन दृष्टि प्रस्तुत की है, जो आधुनिकता बोध का ही प्रतिफल है क्योंकि आधुनिकता बोध वह युग चेतना है जिसमें मनुष्य अपनी परंपराओं, रीति-रिवाजों, धर्म आदि का अंधानुकरण न करते हुए इन सभी का तार्किक दृष्टि से आलोचनात्मक मूल्यांकन करता है। तत्पश्चात् सामाजिक, धार्मिक व मानवीय हितों के लिए उन्हें ग्रहण करता है, जो उस युग विशेष के साहित्य पाठकों के मार्गदर्शक के एक सशक्त माध्यम की भूमिका का निर्वहन करता है।

युवा दलित रचनाकारों की कहानियों में पुरानी परिपाटी को त्यागकर नई विचारधारा के दृश्य दिखाई पड़ते है। जिन युवा दलित रचनाकारों की कहानियों पर मैने शोध करने का निर्णय लिया है उनका संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित है।

<u>ओमप्रकाश वाल्मीकि</u>

दलित साहित्य में ओमप्रकाश वाल्मीकि का नाम बहुत ही आदर के साथ लिया जाता है। आपकी कहानियों का स्वर दलित संघर्ष पर आधारित है। आप अपनी कहानियों के माध्यम से समाज की ब्रह्म्णवादी झूठी नीतियों पर प्रहार करते दिखाई देते है। परम्पराओं का विरोध और खण्डन के स्वर भी आपके कहानी संग्रह में पाये जाते है।

<u>सूरजपाल चौहान</u>

दलित साहित्य में सूरजपाल चौहान का नाम भी महत्वपूर्ण है। आपने भारतीय समाज के कई अनछुए पहलुओं को अपनी कहानियों के माध्यम से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया। आपकी भाषा ने सहज तरीके से समाज को आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। आपको हिन्दी एकेडमी अवार्ड प्राप्त है।

<u>जयप्रकाश कर्दम</u>

जयप्रकाश कर्दम ने दलित साहित्य को अपनी लेखनी द्वारा मजबूती देते हुए उसे परिमार्जित किया। जिस कारण उनका नाम सदैव आदर से लिया जाता रहेगा। वर्ग संघर्ष उसकी आशा–निराशा, अपेक्षा आदि को अपने कहानी संग्रह में स्थान दिया जिस कारण यह पाठक के हृदय पटल पर अमिट छाप छोड़ता है। आपका कहानी संग्रह ''खरोंच'' इसी प्रकार का कहानी संग्रह है।

<u>मोहनदास नैमिशराय</u>

मोहनदास नैमिशराय का नाम दलित साहित्य में मील का पत्थर माना जाता है वर्णभेद और वर्गभेद पर आपकी कहानियाँ समाज के उस भयाभय चेहरे को हमारे समक्ष प्रस्तुत करती है जो कि सदियों से एक सुन्दर नकाब पहने हुए था। आपका

कहानी संग्रह ''आवाजें'' प्रमुखतः इन सभी विद्रूपताओं को हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है।

<u>सुशीला टांकभौरे</u>

सुशीला टांकभौरे महिला दलित रचनाकारों में चमकता हुआ नाम है। आपने महिला के दर्द, वेदना और संघर्ष को अपनी कहानी के माध्यम से जनमानस तक पहुचाया। इनका साहित्य दलित साहित्य को सशक्त बनाता है।

<u>रजत रानी मीनू</u>

रजत रानी मीनू का नाम महिला दलित रचनाकारों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। जातिवाद के दंश को झेल रहे पीड़ित समाज के संघर्ष और वेदना को आपने प्रभावपूर्ण तरीके से कहानियों के माध्यम से अभिव्यक्त किया। स्त्री के जीवन की पीड़ा और संघर्ष को आपने अपनी लेखनी द्वारा स्वर प्रदान किया।

<u>रजनी दिसोदिया</u>

युवा दलित कहानीकारों में 'रजनी दिसोदिया' एक महत्वपूर्ण लेखिका है उनका कहानी संग्रह 'चारपाई' स्त्री जीवन के विभिन्न पक्षों को सामने रखने के साथ–साथ साहित्यिक विमर्श को भी हमारे सामने प्रस्तुत करता है। इस संग्रह में लगभग दस कहानियाँ है।

<u>अनिता भारती</u>

अनिता भारती की कहानियाँ न केवल दलित समाज की समस्याओं को हमारे सामने रखती है बल्कि स्त्री के आत्मसम्मान व स्वाभिमान को कायम रखते हुए उन्हे समाज

में सर उठाकर जीने की प्रेरणा देती है। उनकी कहानी 'एक थी कोटेवाली' अध्यापिकाओं के बीच रिजर्वेशन वालों के प्रति घृणा को बखूबी हमारे सामने रखती हैं।

केदार प्रसाद मीणा

नई पाढ़ी के दलित साहित्यकारों में केदार प्रसाद मीणा अपनी परिवर्तनकारी सोच के कारण एक उभरता हुआ नाम है। आपने दलित जीवन की समस्याओं का चित्रांकन इतने सजीव ढंग से किया है कि वह पाठक के हृदय पटल पर एक अमिट छाप छोड़ती है। आपका कहानी संग्रह 'कामरेड मीणा' इसका प्रमुख उदाहरण है।

कैलाश चौहान

कैलाश चौहान दलित रचनाकारों में अपना अलग विशिष्ट स्थान रखते हैं। आपका कहानी संग्रह 'संजीव का ढाबा' विभिन्न सामाजिक समस्याओं को हमारे सामने रखता है।

पूरन सिंह

पूरन सिंह हिंदी दलित साहित्य के महत्वपूर्ण लेखक है उनकी कहानियाँ समाज में व्याप्त दलितों के प्रति घृणा को हमारे सामने रखती है। इनकी कहानियों में समाज में व्याप्त समस्याओं के साथ–साथ उनका समाधान भी प्रस्तुत करती हैं।

अर्जुन सावेदिया

युवा दलित रचनाकारों में अर्जुन सावेदिया एक उभरता हुआ नाम है। इनकी कहानियों में समाज की वर्गभेदी व वर्णभेदी व्यवस्था तथा उनके उत्पन्न समस्याओं

का सजीव चित्रण दिखाई पडता है। इनकी कहानियाँ दलित समुदाय की उन समस्याओं को सामने रखती है जिन्हें वे दंश के रूप में आज भी झेल रहे हैं।

पुन्नी सिंह

पुन्नी सिंह ने अपनी लेखनी दलित लोगों के दयनीय जीवन, उनकी आशा व उम्मीदों के अंकन हेतु चलायी। आपका साहित्य परिवेश के प्रति सजग होने के कारण आधुनिक समस्याओं का अंकन करने में पर्णतः सक्षम है आपका लेखन पाठक को भावत्मक रूप से जोड़कर उसे स्वाभिमान व सम्मान के साथ जिंदगी जीने की सीख देता है। आपका कहानी संग्रह 'गलियों की भाषा' परिवेश के प्रति सजगता से परिपूर्ण कहानी संग्रह है।

अमित कुमार दुश्मन

अमित कुमार दुश्मन का नाम युवा दलित कहानीकारों में प्रमुख रूप से लिया जाता है। आपकी कहानियाँ सामाजिक समस्याओं के साथ–साथ दलित समाज की आर्थिक विपन्नता को भी हमारे समक्ष प्रस्तुत करती है।

अजमेर सिंह काजल

अजमेर सिंह काजल का नाम दलित साहित्य में अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है। आपकी कहानियाँ दलित समुदाय की समस्याओं को सामने रखने के साथ–साथ उनका समाधान भी प्रस्तुत करती है जो विद्रोह की प्रेरणा तो देती ही है किंतु साथ में एक सकारात्मक सोच भी संप्रेषित करती है।

<u>सूरज बडत्या</u>

सूरज बडत्या का नाम युवा दलित साहित्य की अनिर्वयता है। आपकी लेखनी ज्वलंत, आवश्यक व समकालीन मुद्दों को हमारे सामने प्रस्तुत करने में पूर्णतः सक्षम है। आपका कहानी संग्रह 'कामरेड का बक्सा' दलित जीवन के यथार्थ चित्र को प्रकाश में लाता है। अब तक पत्र पत्रिकाओं मे लगभग चार दर्जन रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

<u>कैलाश वानखेडे</u>

कैलाश वानखेडे द्वारा रचित 'सत्यापन' कहानी संग्रह में नौ कहानियाँ है जो समाज को वर्गभेदी व्यवस्था का यथार्थ रूप हमारे सामने रखती है। दलित समुदाय पर हो रहे अत्याचार और शोषण को कहानी के माध्यम से दर्शाने के साथ–साथ उनका विरोध करने की सीख भी देती है।

<u>टेकचंद</u>

हिंदी दलित साहित्य में अपनी कहानियों के माध्यम से सशक्त लेखनी का योगदान देने में टेकचंद महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। इनकी कहानी संग्रह 'मोर का पंख तथा अन्य कहानियाँ' सामाजिक समस्याओं को हमारे सामने रखने के साथ–साथ उनका समाधान भी प्रस्तुत करती है।

<u>मुकेश मानस</u>

मुकेश मानस की कहानियाँ ग्रामीण जीवन की पृष्टभूमि पर लिखी गई प्रेम की त्रासदी को पाठकों के सामने रखती हैं। इनकी कहानियों में ग्राम्य जीवन के उस उत्पीडन का यथार्थ चित्रण है जिसे वह सदियों से सहता आ रहा है।

दिलीप कठेरिया

दिलीप कठेरिया युवा दलित रचयनाकरों में एक विशिष्ट स्थान रखते है। इनके द्वारा रचित कहानियाँ समाज में व्याप्त विपन्नता व विद्रूपताओं का याथार्थ चित्र हमारे समक्ष प्रस्तुत करती है।

युवा दलित कहानीकारों की कहानियों में रचनाशीलता, अर्थव्यवस्था, राजनीतिक चरित्र, भूमण्डलीकरण तथा निजीकरण से आने वाले बदलावों की चुनौतियों से मुँह न मोड़कर उनका सामना करने की प्रेरणा मिलती है। युवा दलित रचनाओं की कहानियों का चयन मैंने शोध कार्य हेतु इसलिए किया है क्योंकि इन कहानियों का उद्देश्य वर्णभेदी संघर्ष दर्शाने के साथ-साथ समाज में साहित्य के माध्यम से समानता, बंधुत्व और स्वतंत्रता की स्थापना करते हुए मानवतावादी साहित्य को अस्तित्व में लाना है। इनके साहित्य को सही अर्थों में अंबेडकरवादी साहित्य की संज्ञा दी गई है। यह साहित्य जातिविहीन और वर्गहीन समाज की स्थापना के लिए भी निरंतर प्रयासरत् है। कथ्य और भाषा शैली कहानी को जीवंत रूप प्रदान करती है। इन कहानियों के माध्यम से वर्गभेद और वर्णभेद के चित्रण के साथ-साथ सामाजिक संरचना व आर्थिक विपन्नता की समझ हमारे सामने आती है। जाति का चिंतन होने के कारण ये कहानियाँ सकारात्मक दृष्टिकोण को लेकर आगे बढ़ती है तथा वर्गभेद व वर्णभेद की समस्याओं के साथ समाज की नई समस्याओं व कथ्य और संवेदना की नई दृष्टि को हमारे सामने प्रस्तुत करती है, जो दलित साहित्य में नवीन ऊर्जा का संचार करती है। इनकी कहानियों को पढ़ने के बाद मैंने नई पीढ़ी के प्रमुख दलित रचनाकारों की कहानियों में आधुनिकता बोध (सन् 2005-2015 तक) विषय को लेकर शोध करने का निर्णय किया। डॉ. कमलेश कुमारी 'रवि' जी व डॉ. सूरज बड़त्या के प्रोत्साहन मिलने पर मेरे निर्णय को बल मिला और मेरा शोध विषय "नई पीढ़ी के प्रमुख दलित रचनाकारों की कहानियों में आधुनिकता बोध (सन् 2005-2015 तक)" निश्चित हुआ है।

शोध की आवश्यकता एवं उद्देश्य:

युवा दलित रचनाकारों की कहानियाँ पहली व दूसरी पीढ़ी से भिन्न व परिवर्तनों के साथ-साथ नयापन लिये हुई है । इन कहानियों में मानसिक संघर्ष व सामाजिक संघर्ष एक सकारात्मक मोड़ लेकर आगे बढ़ती है । यह पाठक को एक सकारात्मक व नवीन ऊर्जा का संदेश संप्रेषित करती है । स्वाभिमान और आत्मसम्मान के साथ चुनौतियों का सामना करते हुए आगे बढ़ने की विचारधारा ही इन कहानियों की असीम ऊर्जा है । दलित साहित्य की ये कहानियाँ अलग दृष्टिकोण से लिखी गई है । यह कहानियाँ में दलित समाज के यथार्थ रूप को तथा फैले अलगाव को बड़ी कुशलता व कलात्मकता के साथ प्रस्तुत करते हुए समानता, स्वतंत्रता, बंधुत्व जैसे उद्देश्यों को साथ लेकर चलती है। शोध के माध्यम से कहानियों के इस स्वरूप का विश्लेषण व गहन अध्ययन विभिन्न विचारों के माध्यम से करना मेरे शोध कार्य की आवश्यकता, उपादेयता व सार्थकता को सिद्ध करता है । इन कहानियों में पात्र के द्वारा जातिगत, सामाजिक भेदभाव परिवर्तन आर्थिक विपन्नता जैसी चुनौतियों का सामना, आत्मसम्मान व स्वाभिमान के साथ करते हुए विपरीत धारा में किसी प्रकार अपने लक्ष्य तक पहुँचना है, बखूबी दिखाया गया है, जिसका विश्लेषण करना शोध कार्य की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है ।

नई पीढ़ी के प्रमुख दलित कहानियों में आधुनिकता बोध के अध्ययन व विश्लेषण से पूर्व आधुनिकता बोध के आशय एवं स्वरूप को स्पष्ट करते हुए मध्ययुग का भी अध्ययन किया जाएगा । तथा आधुनिकता बोध व मध्ययुगीन बोध में अंतर स्थापित करने वाले बिंदुओं को खोजकर उनका विश्लेषण किया जाएगा । हिंदी दलित साहित्य के स्वरूप का अध्ययन करते हुए विभिन्न विद्वानों के मूल व उनके योगदान पर विचार प्रस्तुत किये जाएँगे तथा प्रमुख दलित कहानीकारों का संक्षिप्त परिचय दिया जाएगा । हिंदी दलित कहानी ने सौंदर्य का निर्माण परिस्थिति एवं अपने साहित्य के अनुरूप कर रही है। इसका अध्ययन करते हुए सौंदर्य बोध का अर्थ एवं परिभाषा का विश्लेषण विभिन्न विद्वानों के विचारों के आधार पर किया जायेगा । इसके साथ ही हिंदी साहित्य

की दलित कहानी की अंतर्वस्तु के प्रारंभिक स्वर का अध्ययन कर उसे विश्लेषित किया जायेगा। साथ ही युवा दलित कहानीकारों की कहानी की अंतर्वस्तु का सूक्ष्म विश्लेषण करते हुए इन दोनों के मध्य अंतर को खोजकर उनका मूल्यांकन करने के पश्चात् निष्कर्ष प्राप्त किये जाएँगे। साथ ही युवा दलित कहानी में निहित आधुनिकता बोध का सूक्ष्मातिसूक्ष्म अध्ययन करते हुए उसका विश्लेषण आधुनिकता बोध के प्रमुख बिंदुओं जैसे आर्थिक एवं सामाजिक वैषम्य पात्रगत् अंतर्द्वंद्व, आधुनिक नागर बोध, अस्तित्वबोध, विजातीयता एवं अकेलापन के आधार पर किया जायेगा। शोध कार्य हेतु न केवल पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ, संदर्भ ग्रंथ आदि का अध्ययन किया जायेगा अपितु विषय से संबंधित लेखकों के साक्षात्कार-प्रश्नावली व विचारों आदि शोध प्रविधियों का समुचित प्रयोग करते हुए शोध को सार्थक बनाने का तुच्छ-सा प्रयास मात्र रहेगा।

अनुसंधान की प्रविधि :

जिज्ञासा मनुष्य की मूल प्रवृत्ति है जिसके कारण वह नित नई-नई खोज करता है, जो मानव को नवीन ज्ञान और विकास की ओर अग्रसर करता है। इसी खोज को अनुसंधान कहा जाता है जिसकी अनेक पद्धतियाँ है। मेरे द्वारा चयनित विषय "नई पीढ़ी के प्रमुख दलित रचनाकारों की कहानियों में आधुनिकता बोध (सन् 2005-2015 तक)" में वर्णनात्मक, विवेचनात्मक, तुलनात्मक अनुसंधान पद्धतियों का प्रयोग शोध करते समय किया जायेगा। इसके साथ ही लेखकों के विचार, पत्र-पत्रिकाओं को भी अध्ययन का आधार बनाया जायेगा।

पूर्व प्रस्तुत कार्य का विवरण :

मेरे शोध का विषय पूर्णतः नवीन है। मेरी दृष्टि में इस विषय को लेकर किसी भी प्रकार का कोई शोध कार्य नहीं किया गया है।

कार्य की मौलिकता :

"नई पीढ़ी के प्रमुख दलित रचनाकारों की कहानियों में आधुनिकता बोध (सन् 2005-2015 तक)" इस विषय को लेकर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं किया गया है। मेरा शोध पूरी तरह से नवीन एवं मौलिक है। शोध और समीक्षा के क्षेत्र में प्रस्तुत शोध-प्रबंध संतुलित दृष्टि का प्रयास मात्र रहेगा। मेरे शोध के द्वारा साहित्य एवं समाज को एक नवीन विचारधारा देने का एक तुच्छ-सा प्रयास भर रहेगा।

शोधार्थी

तपस्या चौहान

नई पीढ़ी के प्रमुख दलित रचनाकारों की कहानियों में आधुनिकता बोध (सन् 2005–2015 तक)

प्रथम अध्याय

आधुनिकताबोध : आशय एवं स्वरूप

(i) : आधुनिकता बोध

(ii) : मध्ययुगीन बोध

(iii) : अंतर एवं मूल्यांकन

द्वितीय अध्याय

हिंदी दलित कहानी का स्वरूप एवं विकास

(i) : दलित साहित्य की पृष्ठभूमि

(ii) : हिंदी दलित कहानी का स्वरूप एवं विकास

(iii) : प्रमुख दलित कहानीकारों का संक्षिप्त परिचय

तृतीय अध्याय

हिन्दी की नई पीढ़ी की प्रमुख दलित कहानियों में सौंदर्यबोध

(i) : सौंदर्यबोध : अर्थ एवं परिभाषा

(ii) : हिंदी की नई पीढ़ी की प्रमुख दलित कहानियों में सौंदर्यबोध

चतुर्थ अध्याय

नई पीढ़ी की प्रमुख दलित कहानियों की अंतर्वस्तु

(i) : हिंदी दलित कहानी की अंतर्वस्तु का प्रारंभिक स्वर

(ii) : नई पीढ़ी की प्रमुख दलित कहानी की अंतर्वस्तु

पंचम अध्याय

आधुनिकताबोध के परिप्रेक्ष्य में नई पीढ़ी के प्रमुख दलित रचनाकारों की कहानियों का विश्लेषण

(i) : आर्थिक एवं सामाजिक वैषम्य

(ii) : पात्रगत अंतर्द्वंद्व

(iii) : आधुनिक नगर बोध

(iv) : अस्तित्व बोध

(v) : विजातीयता एवं अकेलापन

* उपसंहार

परिशिष्ट

1. आधार ग्रंथ
2. संदर्भ ग्रंथ
3. कोश
4. विश्वकोश
5. पत्र एवं पत्रिकाएँ
6. साक्षात्कार प्रश्नावली
7. वेबसाइट्स

आधार ग्रंथानुक्रमणिका

क्र.सं.	रचनाकार	रचना	प्रकाशन	संस्करण
01.	ओमप्रकाश वाल्मीकि	अम्मा और अन्य कहानियाँ	मनोहर पब्लिशर्स, नई दिल्ली	2008
02.	सूरजपाल चौहान	नया ब्राह्मण	हिन्दी बुक सेन्टर, नई दिल्ली	2014
03.	जयप्रकाश कर्दम	खरोंच	स्वराज प्रकाशन,नई दिल्ली	2013
04.	मोहनदास नैमिशराय	आवाजें	दया पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली	2011
05.	सुशीला टांकभौंरे	संघर्ष	शरद प्रकाशन, अहमदाबाद, गुजरात	2006
06.	रजत रानी मीनू	हम कौन हैं	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2012
07.	रजनी दिसोदिया	चारपाई	स्वराज प्रकाशन नई दिल्ली	2014
08.	अनीता भारती	एक थी कोटेवाली	लोकमित्र प्रकाशन, दिल्ली	2012
09.	केदार प्रसाद मीणा	कामरेड मीणा		
10.	कैलाश चौहान	संजीव का ढाबा	आरोही प्रकाशन दिल्ली	2012
11.	पूरन सिंह	मजबूर	आलोक पर्व प्रकाशन, दिल्ली	2012
12.	अर्जुन सावेदिया	सड़ाँध		2011
13.	पुन्नी सिंह	गलियों की भाषा	हिन्दी बुक सेन्टर, नई दिल्ली	2008
14.	अमित कुमार दुश्मन	रे नटवा		
15.	राजेश चौहान			
16.	अजमेर सिंह काजल	गणतंत्र के नायक	श्री नटराज प्रकाशन दिल्ली	2012
17.	सूरज बडत्या	कामरेड का बक्सा	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2008
18.	कैलाश वानखेड़े	सत्यापन		
19.	टेकचंद	मोर का पंख तथा अन्य कहानियाँ	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	2015

सहायक ग्रंथ

1. आधुनिकता के आइने में दलित – अभयकुमार दुबे, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण-2009
2. दलित चेतना : साहित्यिक एवं सामाजिक सरोकार – रमणिका गुप्ता, समीक्षा प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण-2001
3. डॉ. अंबेडकर का संपूर्ण वाङ्मय 22 खण्डों में, प्रकाशन संस्थान, भारत सरकार, दिल्ली
4. परंपरा इतिहास बोध और संस्कृति – श्यामचरण दुबे, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण-2000
5. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र – ओमप्रकाश वाल्मीकि, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण-2014
6. सत्ता संस्कृति और दलित सौंदर्यशास्त्र – सूरज बडत्या, अनामिका प्रकाशन, संस्करण-2009
7. जातिवाद और रंगभेद – चमनलाल, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, द्वितीय संस्करण-2009
8. दलित साहित्य अनुभव, संघर्ष एवं यथार्थ – ओमप्रकाश वाल्मीकि, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण-2013
9. एन. एंथोलॉजी ऑफ दलित लिटरेचर – एलीना जिलट अनुवाद मुल्कराज आनंद, ज्ञान पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली, संस्करण-2013
10. परिवर्तन और विकास के सांस्कृतिक आयाम, पूरन चंद्र जोशी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण-2009
11. दलित हस्तक्षेप – रमणिका गुप्ता, शिल्पग्राम प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण-2004
12. दलित साहित्य की भूमिका – हरपाल सिंह 'हरूष', जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, संस्करण-2005

13. अंबेडकरवादी विचारधारा और समाज – तेज सिंह, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण-2008

14. दलित साहित्य की अवधारणा और प्रेमचंद, सदानंद शाही, प्रेमचंद साहित्य संस्थान प्रकाशन, संस्करण-2000

15. साहित्य और दलित चेतना – महीप सिंह, चंद्रकांत बादिवडेकर, अभिव्यंजना प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2009

16. सत्ता, समाज और दलित, आनंद तेलतुमडे, ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन, संस्करण-2011

17. दलित साहित्य पक्ष प्रतिपक्ष – सूरज बडत्या, फ्रैंड्स फॉर डेवलपमेंट, दिल्ली, संस्करण-2007

18. समय और संस्कृति, श्याम चरण दुबे, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, द्वितीय संस्करण-2000

सहायक पत्र-पत्रिकाएँ

1. दलित अस्मिता, संपादक – विमल थोरात, त्रैमासिक पत्रिका, एंड्रयूजगंज, दिल्ली।
2. नया पथ, संपादक – मुरली मनोहर प्रसाद सिंह, अर्द्धवार्षिक, दिल्ली।
3. बयान, संपादक – मोहनदास नैमिशराय, नई दिल्ली।
4. कथा देश, संपादक – हरिनारायण, मासिक पत्रिका, नई दिल्ली।
5. वाक, संपादक – सुधीर पचौरी, त्रैमासिक पत्रिका, दिल्ली।
6. जनसत्ता अखबार-दैनिक समाचार पत्र, संपादक – ओम थानवी, दिल्ली।
7. तद्भव, संपादक – अखिलेश, इलाहाबाद।
8. युद्धरत आम आदमी, संपादक – रमणिका गुप्ता, त्रैमासिक पत्रिका, दिल्ली।
9. शुक्रवार, संपादक – विष्णु नागर, मासिक पत्रिका, दिल्ली।

शोध निर्देशिका के मार्गदर्शन से इसमें उचित परिवर्तन संभव हैं।